लावान लेआ और राहेल के साथ विश्वास तोड़ता है

- ➤ राहेल घर के देवताओं को चुरा लेती है।
- ➤ याकूब को पता नहीं था कि राहेल ने क्या किया है।
- ➤ परमेश्वर लावान से कहता है कि वह याकूब और उसके परिवार को कोई हानि न पहुँचाए।

राहेल ने घर के देवताओं को इसलिए लिया क्योंकि जिसके पास घर के देवता होते थे, वही परिवार की सम्पत्ति और अधिकार का उत्तराधिकारी माना जाता था।

लाबान के देवता ही मुद्दा हैं

- लाबान याकूब का सामना करता है, और याकूब कहता है कि जिसने उसके देवताओं को चुराया है वह मर जाएगा!
- राहेल उन्हें अपने नीचे बैठकर छिपा लेती है।
- वह अपनी मासिक चक्र में है।
- यदि लाबान राहेल या उसके द्वारा छुई गई किसी वस्तु को छूता तो वह धार्मिक रूप से अशुद्ध हो जाता।

याकूब और लाबान वाचा बाँधते हैं

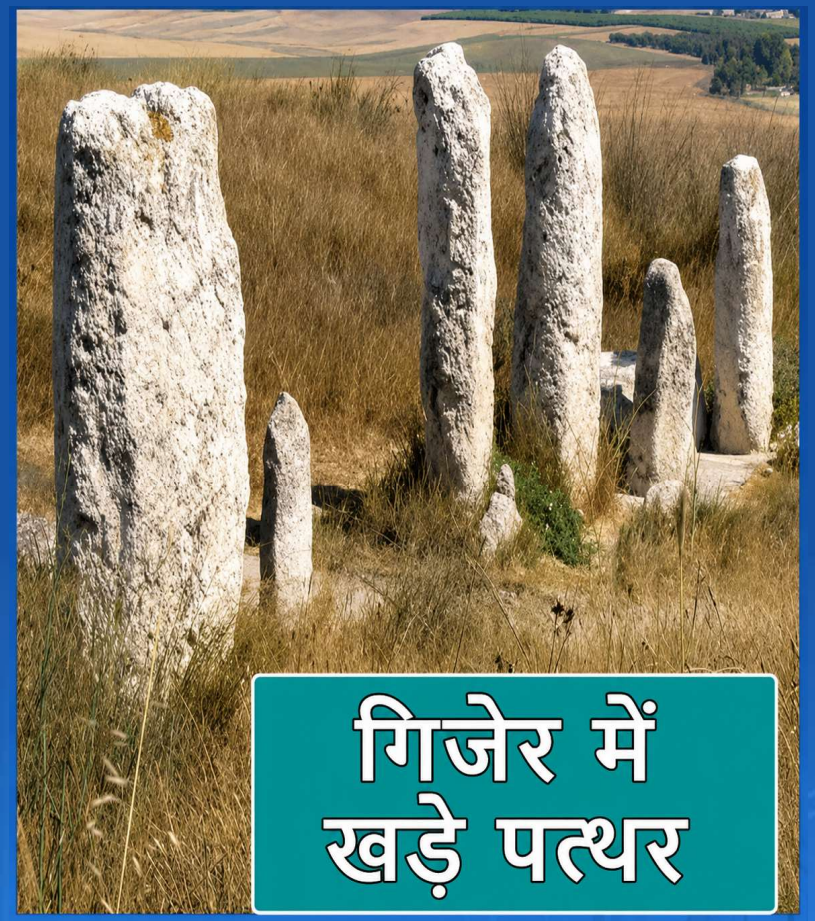

- याकूब लाबान से क्रोधित होता है और उसे डांटता है।
- लाबान उत्तर देता है कि याकूब के पास जो कुछ भी है वह सब उसी का होना चाहिए!
- एक सन्धि की जाती है, याकूब सहमत होता है
- कि वह और पत्नियाँ नहीं लेगा।
- युद्ध न करने की एक वाचा बाँधी जाती है।
- खड़े पत्थर साक्षी के रूप में स्थापित किए जाते हैं।
- जेग अर्साहुदुथा कल्दी भाषा है, गलीद हिब्रू है।
- अर्थ "साक्षियों का ढेर"।

उत्पत्ति अध्याय ३२

- याकूब सम्भवतः नब्बे वर्ष की आयु में है।
- कहा गया: “परमेश्वर के दूत याकूब से मिले...”
- मलाखिम एलोहिम = परमेश्वर के दूत
- कनान छोड़ने की यात्रा पर याकूब को दूतों का सामना हुआ।
- वापस आने की यात्रा पर भी दूतों का सामना हुआ।
- उस स्थान का नाम महा नयिम रखा.....अर्थ दो शिविर

याकूब को एसाव का सामना करना होगा

- एसाव ने याकूब को मार डालने की शपथ ली है।
- दूत एसाव को पाते हैं, और रिपोर्ट करते हैं कि एसाव चार सौ पुरुषों के साथ आ रहा है!
- याकूब डरता है कि सबसे बुरा होने वाला है।
- वह अपने परिवार को दो समूहों में बाँट देता है (महा नयिम)।
- याकूब परमेश्वर से सहायता की विनती करता है।

इसाऊ ने अपने जन्मसिद्ध अधिकार को तुच्छ जाना। उत्पत्ति अध्याय २५ पद ३४

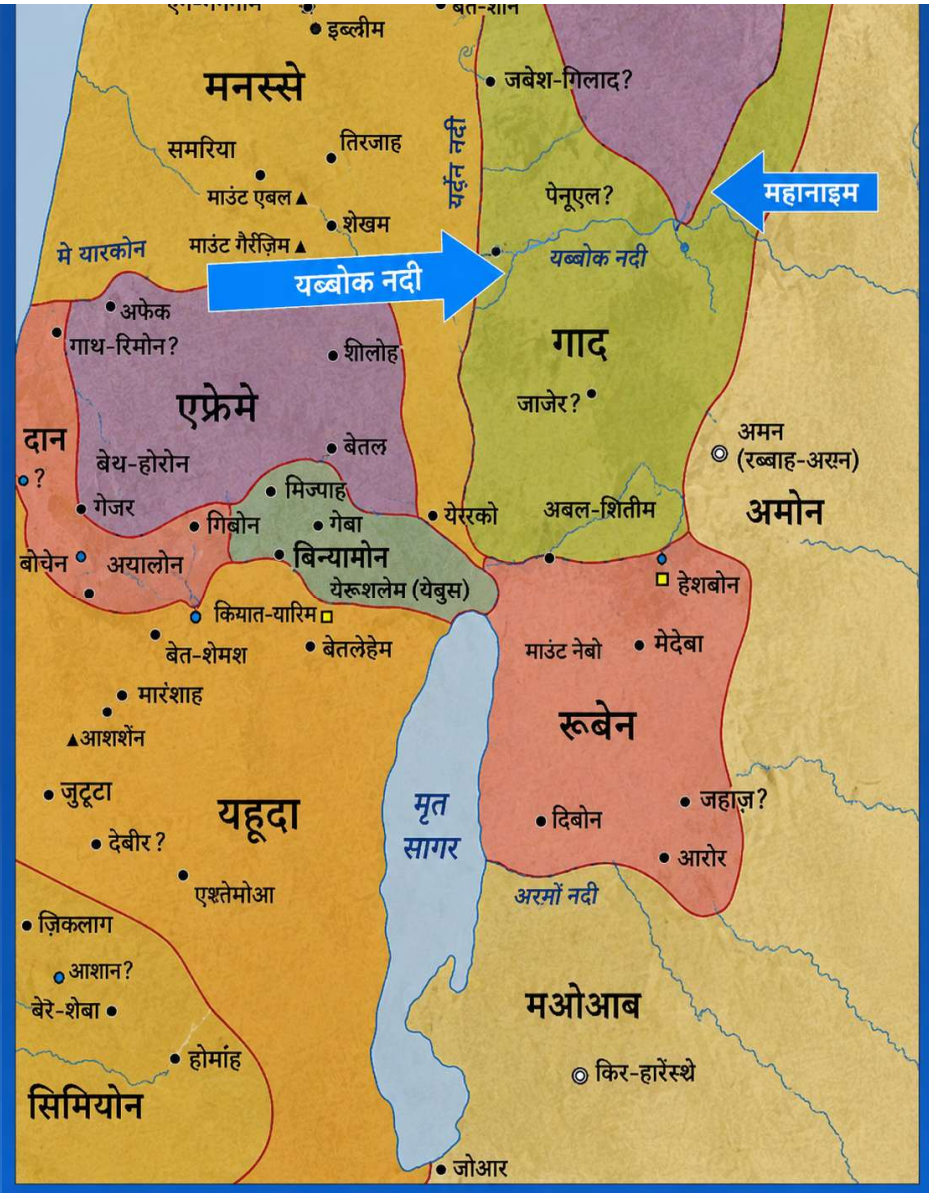

याकूब यब्बोक पर प्रतीक्षा करता रहा

- यर्दन नदी वहाँ से दिखाई देती थी जहाँ याकूब ने डेरा डाला था।
- याकूब ने एसाव को पाँच सौ पचास पशु उपहार स्वरूप अर्पित किए।

कुश्ती का मुकाबला

- आरम्भ में कहा गया कि याकूब ने एक "पुरुष" से कुश्ती की।
- ईश = पुरुष
- याकूब की कूल्हे की हड्डी निकल गई ताकि मुकाबला समाप्त हो।
- पद २९ और ३१ में बदलकर कहा गया कि वह प्राणी "एलोहिम" (परमेश्वर) था।
- एक दूत "दिव्य वचन का वाहक" है।
- एक दूत परमेश्वर की ओर से दिव्य सन्देश लाता है, अथवा कोई निर्देश पूरा करता है।

मलाख एलोहिम अनेक सन्दर्भों में प्रयुक्त

- सबसे अच्छा समग्र अनुवाद जो अर्थ को अधिक सही पकड़ता है वह सम्भवतः "दिव्य वचन के दूत" हैं।
- नबी हाग्गै और मलाकी को "मलाख एलोहिम" कहा गया।
- मलाख एलोहिम और यहोवा के बीच का भेद अक्सर पवित्रशास्त्र में धुँधला हो जाता है।
- जलती झाड़ी में यह "मलाख एलोहिम" था।
- येशु के साथ भी यही मुद्दा है।
- ➤ वह है:

  १) दिव्य वचन का वाहक (दूत)

  २) स्वयं दिव्य वचन (परमेश्वर)

  ३) मांस और रक्त (मनुष्य)

मुझे आशीष दे!!

- याकूब ने पहचाना कि यह कोई साधारण पुरुष नहीं था।
- सभी विश्वासियों को अपने जीवन के नियन्त्रण के लिए परमेश्वर से कुश्ती करनी चाहिए।
- हम अतीत के घावों के साथ आगे बढ़ेंगे।
- याकूब एक स्थायी विकलांगता के साथ आगे बढ़ा।

याकूब का नाम बदलकर इस्राएल रखा जाता है

- क्योंकि याकूब ने अन्ततः परमेश्वर के सामने समर्पण किया, उसे नया नाम मिला।
- इस्राएल का सम्भवतः अर्थ है परमेश्वर के साथ राजकुमार।
- जब हम परमेश्वर से लड़ते हैं, तो अपनी शर्तों पर विजय की कोई सम्भावना नहीं होती।
- हमारी एकमात्र विजय तब आती है जब हम (हमारा स्व) पराजित हो जाते हैं।
- "...इसीलिए आज तक इस्राएल के बच्चे..."
- यह एक सम्पादन दर्शाता है
- यह पीछे की ओर देखकर लिखा गया था।
- याकूब को नया नाम इसलिए मिला कि उसके नए स्वभाव का वर्णन हो।